1-3-67 ओम शान्ती रात्री क्लास

अभी तुम हो संगम युगी ब्राह्मण और ब्राह्मणियां। बाकी और सब है कलियुगी शुद्र बुधी। उन ब्राह्मणों की बुधी और तुम ब्राह्मणों की बुधी में कितना फर्क है। अब तुम जानते हो कि हम सच्चे ब्राह्मण है। फिर देवता बन रहे है इस योग और पढ़ाई से। शुद्र को शुद्र बुधी को अस्वच्छ बुधी कहा जाता है। तुम भी अल्प बुधी से वैष्णव की विशाल बुधी बनते हो। यहल-उन विनाश बुधी है ना। इनको पाण्डव बुधी कहा जाता है। यह तुम बन रहे हो। तुम बच्चों को कितनी पुआइन्टस मिलती है बुधी में लाने की। हमको भगवान पढ़ाते है इसलिये ही उनको भगवान भक्ति कहा जाता है। बरसु है देवी-देवता धर्म। तो तुम बच्चों को कितनी खुशी होनी चाहियें। मूल वतन में बाबा के साथ हम आत्मायें रहती है। उनको कहा जाता है परम-आत्मा। तुम भी परमधाम मे रहते हो। तुम जानते हो कि बाप पुर्नजन्म मेंनहीं आते है। उनको ज्ञान सागर नालेज फुल कहा जाता है। बच्चे यह तो समझ सकते है ना कि यह 84का चक्र है। इस झाड़ का बीज ऊपरहै। देवी-देवता धर्म है फाउंडेशन। है वो भी मनुष्य। परन्तु वो दैवी गुण वाले है इसलिये उनको देवता कहा जाता है। अब तुम जानते हो कि हम ऐसे बन रहे है। ऐसे थे। फिरवर्ण बदलते गये। अभी हम ब्राह्मण वर्ण के है। यह बातें याद करनी कोई मुश्किलनहीं है। अभी हम ऊंच ते ऊंच चोटी के है। ब्राह्मण होते ही है संगम पर। यह है पुरुषोतम संगम युग। पुरुषोतम युग के कारण पुरुषोतम मास भी कहते है। पुरुषोतम वर्ष भी कहते है। पुरुषोतम बनने में हमको 40, 50 वर्ष लगते है। कनिष्ट से उत्तम बनते है। अब बाप समझाते है कि भक्ति मार्ग अलग है। उसको ज्ञाननहीं कहेंगे। वो है भक्ति मार्ग का ज्ञान। यह है ज्ञान मार्ग का रूहानी ज्ञान। रूहानी बाप आकर रूहों को पढ़ाते है। अन्दर में आना चाहिये कि हम आत्मा सुन रही है हम आत्मा बोल रही है। आत्मा ना होती तो शरीर कुछ कर ना सके। आत्मा कितनी छोटी है। परदर्शनी में भी परिचय ही देना है आत्मा और परमात्मा का। यह नालेज तुमको पहले थी क्या? आत्मायें कहा से नालेज लावें? इसलिये ही बाप को याद करते है है ज्ञान का सागर आकर नालेज दो। आत्मा का नालेज भी कोई में नहीं है। बाप एक ही बार पतित पावन बनते है। अब तुम जानते हो कि दुनियां पलट रही है। पुराने से नई बन रही है। आत्मा में खाद पड़ कर पुरानी हो गई है। अब फिर पुरानी से नई बनरही है। आत्मा को जंग लग गई है। जब जंग लगती है तो मिटी के तेल में डालते है। अब आत्मा तो है चेतन। इसमें खाद पड़ गई है। वो निकले कैसे। यह समझानी बाप के बिना और तो कोई दे भी नहीं सकते है। बाप कहते है मीठे बच्चे जो ऊपर से आत्मायें आती है वो पवित्र होती है। हर चीज ही पहले पवित्र फिर अपवित्र होती है। रावण के राज्य में है भक्ति। ज्ञान हो नहीं सकता है। वो भक्ति मार्ग का ज्ञान है। उससे सदगती मिल नहीं सकती। भक्ति से दुर्गती होती है। बाप समझाते है कि इसी भक्ति से तुम घृणा लायक बन गये हो। पहले महिमा लायक पूज्य थे। फिर घृणा लायक पुजारी बन गये हो। बाप ही आकर समझाते है कि यह रावण कब का दुश्मन है। इतना तो बड़ा दुश्मन है जो हर वर्ष वे उसका बुत बना कर जलाते है। मनुष्य नहीं जानते कि इसका अन्त कब होगा। तुम जानते हो कि सतयुग में यह रावण होता ही नहीं है। तुम बच्चों की बुधी में यह नालेज है। और सबकी बुधी में है शास्त्रों की नालेज। तुमको सिर्फ बाप को ही याद करना है। बुधी में है कि ड्रामा का चक्र कैसे फिरता है। तुम बच्चों को यह खुशी रहनी चाहिये कि हमारा बाप बापभी है सिक्षक भी है। तुम्हारा सारा दारोमदार पढ़ाई पर ही है। जो कुछ भी करते हो अपने ही लियें। आत्मा को परमात्मा से वर्सा मिलता है। अपने को आत्मा समझ कर बाप को तो बहुत प्यार से याद करना है। माँ को याद नहीं करना है। बाप कहते है कि मुझे याद करो। माँ जगत-अम्बा तो साकार में है ना। बाप है निराकार। वो ही कहते है मामेकम याद करो। इन लक्ष्मी नारायण को भी शिव बाबा से वर्सा मिलता है। वो ही ज्ञान सागर है। तो जरूर ज्ञान देते है ना। अच्छा मीठे मीठे सिकीलधे मात-पिता बापदादा का सिकिलधे बच्चों को याद प्यार गुड़ नाईट